कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MVS–004

एम. ए. वैदिक अध्ययन (एम. ए. वी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम.वी.एस.–004 : निरुक्त एवं प्रातिशाख्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र* **दो** *खण्डों में विभाजित है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड–क

निर्देश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* **चार** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 15 अंक निर्धारित है।*

$4 \times 15 = 60$

1. निरुक्त के रचयिता का परिचय लिखकर निघण्टु एवं निरुक्त के सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

2. भाषा–विज्ञान के मौलिक सिद्धान्तों का समीक्षात्मक वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

3. निर्वचन की भारतीय परम्परा का उल्लेख कीजिए।

4. अग्नि, वैश्वानर और जातवेदस् के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

5. देवता आकार चिन्तन का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

6. यास्क के अनुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

7. ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार परिभाषाओं का वर्णन कीजिए।

8. शौनक द्वारा रचित वृहद्देवता के प्रतिपाद्य का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

निर्देश : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 15 अंक निर्धारित है।*

$4 \times 10 = 40$

1. वेदाध्ययन प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

2. प्रातिशाख्यों के आधार पर स्वर सन्धि का वर्णन कीजिए।

3. उपसर्ग एवं निपात पर टिप्पणी लिखिए।

4. मन्त्रों के प्रतिपाद्य पर टिप्पणी लिखिए।

5. भावविकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

6. ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार अनुदात्त और स्वरित् स्वरों का वर्णन कीजिए।

7. ऋक् प्रातिशाख्य के शिक्षा-पटल का प्रतिपाद्य क्या है ? संक्षेप में लिखिए।

8. उपसर्ग विषयक मतों का वर्णन कीजिए।